Vol II Issue IX
ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidiciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume2, Issue.9, Oct 2012
ISSN:-2230-7850

Available on all social networks

ORIGINAL ARTICLE

इक्कीसवीं सदी में आदिवासी उपन्यासः स्थिति एवं संभावनाएँ

भोपळे वर्षाराणी रामकृष्ण

सारांश :

हिंदी साहित्य की विधाओं में उपन्यास विधा अत्यंत सशक्त एवं प्रभावशाली है। उपन्यास समाज जीवन के व्यापक फलक को अपनी परिधि में समेटता है, इसी कारण उपन्यास को मानव जीवन का महाकाव्य कहा गया है। हिंदी उपन्यास ने लगभग सवा सौ वर्षों की यात्रा पूरी कर ली है।

आधुनिक हिंदी उपन्यास का प्रमुख एवं केंद्रीय स्वर मानवजीवन से जुड़ाव और सामाजिक सरोकार है। आधुनिक हिंदी उपन्यास को विविध वर्गों म`विभाजित किया जा सकता है। जैसे– मनोविश्लेषणवादी उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास,प्रयोगवादी उपन्यास, आंचलिक उपन्यास इनमें और एक नाम शामिल हो रहा है,आदिवासी चेतना से युक्त उपन्यास जिसे जनजातिमूलक उपन्यास भी कहा जाता है। इस उपन्यास ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। हिंदी के आदिवासी उपन्यासकारों ने देश के दूर–दराज के आंचलों में रहनेवाले आदिवासियों के जीवन को उजागर किया है, जिसने आज आन्दोलन का रूप ले लिया है। आदिवासियों के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक जीवन का चित्रण करने के साथ–साथ उनकी समस्याएँ, शोषण, अभाव गरीबी, पीछड़ापन, अशिक्षा आदि पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

स्थिति

राकेश कुमार सिंह का सन 2003 में प्रकाशित 'पठार पर कोहरा' झारखंड़ के जनजातीय जीवन पर लिखा उपन्यास है। रचनाकार ने शोषण, उत्पीड़न और अत्याचारके विभिन्न हथकंड़ों के चंगुल में फॅसे संथाल और मुण्डा आदिवासियों की नियति को उजागर किया है। स्वतंत्रता पश्चात झारखंड़ में आदिवासी इलाकों में शोषण की साहू,बाबू और बन्दूक की नई संस्कृति का उदय हुआ था। उपन्यास का बेचू तिवारी, जंगल सेना, फॉरेस्ट अफसर इसी संस्कृति के प्रतीक है। ''जंगलसेना और बेचू तिवारी कातिरेसठ का ऑकड़ा हर खेल में बेंचू तिवारी का साथ देता..... वैसे तो क्षेत्र केवन–विभाग के सारे कर्मचारी, ब्लाक अफसर, थाना–पुलिस–सभी जानते है कि समस्त कारोबार ढॅके तौर पर बाबा गऊॅवॉ यानी बेचू तिवारी के ही है''1 यह स्थितियॉ आज भी बदस्तुर विद्यमान है। आतंक, शोशण, दमनचक्र और हिंदू धर्म की उपेक्षा के शिकार आदिवासी ख्रिश्चन मिशनरियों के झॉसे में आकर धर्म परिवर्तन कर लेते है।''बनासकॉठा के लगभग सारे मुण्डा क्रिस्तान बन गये है। गले में क्रास पहिरने लग`है।''

प्रस्तुत उपन्यास में शोशण, उत्पीड़न और अत्याचार के नये–नये दुश्चक्रों के जालमें फॅसे आदिवासी मानस को जागृत करते हुए, उनमें अस्मिता और चेतना को जगानेवाले एक संवेदनशील और दुर्दम्य आत्मविश्वास, इच्छाशक्तिवाले नायक, पेशे से अध्यापक संजीव सान्याल की संघर्षगाथ है। साथ ही हताशा में घिरी एक आदिवासी मुण्डा युवती रंगेनी के आत्मसंघर्श, अस्तित्व की रक्षा और नारीमुक्ति की कहानी है। उपन्यासकार ने झारखंड़ के आदिवासी लोकजीवन की छटाओं का चित्रण करते हुए उनक`सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन को स्पर्श करने का प्रयास किया है।

मधुकर सिंह द्वारा लिखा 'बाजत अनहद ढ़ोल' उपन्यास सन 2005 ई. मेंप्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास झारखंड के संथाल आदिवासियों की अंग्रेज साम्राज्य के खिलाफ किए गए संग्राम की पृश्ठभूमि में लिखी महागाथा है। हिन्दुस्थान में अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ बगावत का बिगूल सर्वप्रथम झारखंड में ही बजा था। इस बगावत के पुरोधा संथाल हुल के नायक सिध्दो, कान्हो, चॉद, भैरो थें। इनके नेतृत्व में संथाल परगना में व्यापक जनांदोलन चलाया गया। आदिवासियों मे देशप्रेम, स्वाधीनता की चेतना,अपने जल–जंगल–जमीन के लिए मर मिटने का जज्बा इन नायकों ने जगाया। सिधो,कान्हो, चॉद, भैरो, वीर सिंह माझी के नेतृत्व में आदिवासी संगठित डुए। इन जननायकों के कारण ही अंग्रेजों को देश से खदेड़ने का हौसला बुलंद हुआ। आदिवासियों में देशप्रेमकी चेतना जागृत हुई–''हमारी धरती खाली कर अपने देश चले जाओ। पहाड, नदी,झरना, खेत सब कुछ हमारा हैं–पूरा संथाल परगना हमारा है। पहाड़ काटकर, जंगलसाफ कर हमने खेत बनाए हैं। उन खेतों पर लगान–मजूरी तय करने का काम तुम्हारा नहीं है।''

संथालों ने तत्कालीन कम्पनी सरकार की शासन व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था और न्याय व्यवस्था के विरूध्द मोर्चा बन्द होकर हथियार उठाये थें किन्तु कम्पनी सरकार ने इसे विद्रोह करार दिया। आदिवासियों ने परंपरागत छापामारी युध्द, तीर–धनुश्य, भालों से आधुनिक हथियारों से लैस अतातायी अंग्रेजों का बड़े साहस से मुकाबला करते हुए वीरभूमि तक कब्जा जमाया इससे ब्रितानिया शासनकर्ता बौखला गये। छल और कपट का सहारा लेते हुए–''ब्रिटिश शासन फौजियों ने जुल्म का नंगा नाच शुरू कर दिया। हजारों संथाल जवान, बच्चे, औरतें और बूढ़े मार दिए गए संथाल बस्तियॉ वीरान कर दी गयी।''3 अंग्रेजों ने खून की नदियॉ बहायी, बर्बरता को पराकाष्ठा पर पहॅुचाया, कत्ल का सिलसिला चलाया बूढ़ें, बच्चों, महिलाओं, जवानों पर मुकदमें चलाए कारा में बंद किया।सिदो को पकडकर फॉसी दे दी गयी। फिर भी संतालियों की आजादी और अस्मिता की भावनाऍ कम नही हुई। अंततः सरकार ने पूरे संथाल परगना में 14 नवंबर 1855 में मार्शल लॉ लागू कर दिया। और बडी निर्ममता से संथाल विद्रोह को दबा दिया।

झारखंड की संथाल–क्रान्ति अंग्रेजों को हिन्दुस्थान से खदेड़ने की पहली संगठितजन–क्रान्ति थी, लेकिन अंग्रेज इतिहासकारों ने रक्त से सनी महान क्रान्ति को विद्रोह करार दे दिया। क्रान्ति के ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़–मरोड़ प्रस्तुत कर उसे सीमित और विरूपित करने

Please cite this Article as :भोपळे वर्षाराणी रामकृष्ण **,** इक्कीसवीं सदी में आदिवासी उपन्यासः स्थिति एवं संभावनाएँ**: Indian Streams Research Journal (Oct ; 2012)**

का प्रयास किया। मधुकर सिंह ने कलम चलाकर संथालों की युरोपीय इतिहसकारों द्वारा उपेक्षित रखी वीरता, बलिदान, देशप्रेम की भावनाओं न्याय देने का प्रयास किया है।

महिला लेखिका शरद सिंह का 'पिछले पन्ने की औरतें' उपन्यास सन 2005 ई में प्रकाशित हुआ। लेखिका ने मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड़ की बेड़ियाँ जनजाति की महिलाओं को केंद्र में रखकर यह उपन्यास लिखा है। सदियों से उपेक्षित, वंचित, उत्पीड़ित एवं आर्थिक बदहाली का जीवन जी रहीं बेड़ियाँ समाज की औरतों के जीवन सत्य को इस उपन्यास में उजागर किया है। बेड़नियाँ जिस समाज से आती है, उस समाज का जीवन जीने का मुख्य साधन नाच–गाना ही माना जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने बेड़ियाँ समुदाय की उत्पत्ति से लेकर उनके वर्तमान तक का विस्तृत लेखा–जोखा रखा है।स्त्री–विमर्श पर आधारित इस उपन्यास में सदियों से दलित, उत्पीड़ित, शोषित एवं उपेक्षित स्त्रियों की जीवनदशाओं एवं उनसे जुड़ी समस्याओं को बेबाक रूप में प्रस्तुत किया है।

समाज में इन औरतों की उपस्थिति को महसूसा तो जाता है, किन्तु इनके प्रति संवेदना कभी–कभार ही नजर आती है। अधिकतर लागों के लिए यह औरतें नाचने–गानेवाली बेड़ीनें मात्र है, उन्हे हर कोई भोग्या के रूप में भोग सकता है।उपन्यास की नचनारी ठाकुर के बच्चे की माँ बननेवाली है, वह जब ठाकूर से इसके बारे में बतियाती है तब ठाकुर उदासिन भाव से उसके हाथ में कुछ पैसे थमाते हुए कहता है–''जब पैदा हो जाए तो सूचित करना....जब आवश्यकता हो तो और खर्चा पानी माँग लेना।''4 ब्रिटिश सरकारने अपराधीक जनजाति अधिनियम के अंतर्गत अनेक जनजातियों को जरायमपेशा करार दिया, जिनमें से एक बेड़ियाँ जनजाति भी है। स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय संविधान ने इस अधिनियम को हटा दिया किन्तु अनेक जनजातियाँ आज भीउस कलंक को ढो रही हैं। समाज की पूर्वाग्रह दुशित मानसिकताने उनको गैर कानुनी एवं अपराधपूर्ण कार्यों के लिए प्रेरित किया है। ''अन्य समाज में वेश्यावृत्ति को हेय दृष्टि से देखा जाता है किन्तु बेड़ियाँ समाज में वेश्यावृत्ति को निम्न अथवा हेय नहीं माना जाता......वेश्यावृत्ति करनेवाली स्त्रियाँ अपने समाज और परिवार में अपेक्षाकृत अधिक अधिकार प्राप्त होती है.....वे अपनी देह का उपयोग यौन संबंधों के लिए तो करती ही रही है साथ ही चोरी करने में भी अपनी देह का भरपूर उपयोग करती हैं।''

रामनाथ शिवेंद्र द्वारा लिखा 'तीसरा रास्ता' उपन्यास सन 2008 ई. में प्रकाशित हुआ है। उपन्यास में रचनाकार ने विस्थापन, शोशण, उत्पीड़न और व्यवस्था के दमनचक्र में पीसती सोनपुर जनपद के आदिवासियों की नियति को उजागर किया है। आज गैर सरकारी संगठन कुकुरमुत्ते की भाँति ऊग आये हैं, उनकी कार्यप्रणाली और भूमिका पर उपन्यासकार सवालिया निशान उठाता है। वर्तमान में गैर सरकारी संगठन देश–विदेश सेजनकल्याणकारी योजनाओं के लिए बेहिसाब धनराशि प्राप्त करते हैं, जिसका बहुत बड़ा हिस्सा इन संगठनों के कर्ताधर्ता अपनी ऐश–आराम की जिन्दगी पर खर्च कर देते हैं। उपन्यास में 'मानवाधिकार जन समिति' नामक गैर सरकारी संगठन का कर्ताधर्ता और उसकी सहायक प्रो.मधु निहलानी ऐसे ही शातिर और बदमाश हैं, जो एन.जी.ओ. के माध्यम से विकास का छलवा भ्रम पैदा कर रहे हैं। वास्तविक उनके हाथ में समाज को बदलने की ताकत और साधन दोनों है, लेकिन वे आदिवासी समाज के शोषक और भक्षक के रूप में ही कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। उपन्यास के माध्यम से रचनाकार ने आदिवासियों की अपने जल, जंगल और जमीन के लिए, अपने मौलिक अधिकारों क लिए किए जा रहे संघर्ष को उजागर किया है। सरकार की नीति भी आदिवासियों के प्रति निष्क्रिय एवं उदासिन है। सरकार सोनपुर जनपद में 'मानवाधिकार जन समिति' इस गैर सरकारी संगठन की सुधा के नेतृत्व में बांध की परियोजना बनाती है। जहाँ बांध निर्माण प्रस्तावित है, उस प्रस्तावित क्षेत्र में आदिवासी पीढ़ी–दर–पीढ़ी निवास करते आए है। वह इलाका आदिवासियों का ही है लेकिन, ''सरकार ने मान लिया था कि जंगल में इन आदिवासियों के रहवास ही अवैधानिक हैं, इन्हे कोई विधिक अधिकार नहीं कि ये यहाँ रहवास करें।''6

भगवानदास मोरवाल का 'रेत' सन 2008 ई. में प्रकाशित जरायम–पेशा कंजरजनजाति पर लिखा उपन्यास है। उपन्यास के केंद्र में है माना गुरू और माँ नलिन्या की संतान कंजर और उनका समग्र जीवन। तथाकथित सभ्य समाज ने जिसे तिरस्कृत बस्ती करार दिया, उस समाज में जाकर उपन्यासकार ने कंजरों के जीवन के अंतरंग को परत–दर–परत खोलकर समाज के सामने रखकर मानवता के दर्शन कराये है।

ब्रिटिश शासनकाल भारतीय जनजातियों के लिए क्रूर काल कहा जाता है। ब्रिटिशों ने अपराधी जनजाति अधिनियम 1871 में संशोधन कर 1924 में उसे कठोर से कठोर बनाया जिसका अंजाम आज भी जरायम–पेशा जनजातियाँ भूगत रही है, जिसमें से कंजर एक है। इस अधिनियम के कारण ही उनका जीना मुहाल हो चुका है। उपन्यास की कमला बुआ कहती है–''दरोगा जी एक बात कहूँ। इस मुलक में हम तो आज भी वैसे ही हैं, जैसे फिरंगियों के जमाने में थे। पहले फिरंगियों और उनके दलाल पिट्ठुओं ने हमारा जीना मुहाल कर रखा था और अब इन देसी फिरंगियों ने।''7 जरायम–पेशा कंजर समाज में सबसे अधिक दुर्दशा उस स्त्री की होती है जो विवाह कर 'भाभी' बन जाती है। इसके विपरित सुखमय जीवन उसका है जो 'बुआ' बनकर देह–व्यापार करती हुइ खिलावड़ी कहलाती है। कंजरों में देह–व्यापार को खुले आम स्वीकृति प्राप्त है। जो देह–व्यापार करती है वह घर की खरी मालकिन होती है। भाभियों को यहाँ कोई महत्व और स्थान नहीं है न उनका कोई भविष्य होता है और न वर्तमान। जीवन–भर खिलावड़ी, ननंदों, भतीजियों यहाँ तक कि बेटियों की तिमारदारी में लगे रहो और भावी खिलावड़ियों को पैदा करना ही उनका कर्तव्य और जीवन की उपयोगिता माना जाता है।ऐसे समूचे जीवन को तथाकथित सभ्य समाज कलंकित, घृणित और निंदनीय मानता है।पर इसमें अपराध किसका है?समूचे उपन्यास में सामाजिक अन्याय बोध, उससे उत्पन्न वेदना, विद्रोह और प्रतिक्रिया दीखती है, उसे रचनाकार ने उजागर किया है।

'ग्लोबल गाँव के देवता' रणेंद्र द्वारा लिखा, सन 2009 ई. में प्रकाशित उपन्यास है। झारखंड के आदिवासी असुर समुदाय के जीवन को केंद्र में रखकर लिखी यह महागाथा है। असुरों का अपने अस्तित्व, आत्मसम्मान एवं अस्मिता के लिए चल रहा अनवरत दीर्घकालीन संघर्ष और सतत मिटते जाने की प्रक्रिया का दिल दहला देनेवाला चित्रण इस उपन्यास में मिलता है। आसुर समुदाय की यह बदनियति वैदिक काल से लेकर अब तक चली आयी है। उपन्यास का रूमझूम असुर कहता है,''हजार साल में कितने इन्द्रों, कितने पांडवों, कितने सिंगबोंगा ने कितनी–कितनी बार हमारा विनाश किया, कितने गढ़ ध्वस्त किए, उसकी कोई गणना किसी इतिहास में दर्ज नहीं है। केवल लोक कथाओं और मिथकों मे हम जिन्दा है।''8 उपन्यासकार कहता है– ''बदहाल जिन्दगी गुजारती, संस्कृतिविहीन, भाषाविहीन, साहित्यविहीन, धर्मविहीन। शायद मुख्यधारा पूरा निगल जाने में ही विश्वास करती है.....छाती ठोंक–ठोंककर अपने को अत्यंत सहिश्णू और उदार कहनेवाली हिन्दुस्थानी संस्कृति ने असुरों के लिए इतनी भी जगह नहीं छोडी थी। वे उनके लिए बस मिथकों के शेश थे। कोई साहित्य नहीं कोई इतिहास नहीं, कोइ अजायबघर नहीं। विनाश की कहानियों के कहीं–कोई संकेत मात्र भी नहीं''9

'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास असुर समुदाय के अनवरत जीवन संघर्ष कोपूरी जिवन्तता और प्रामाणिकता से प्रस्तुत करता है। देवराज इंद्र से लेकर टाटा,शिंडाल्को, वेदांग जैसे ग्लोबल गाँव के देवताओं तक फैले शोषण और दमनचक्र को उपन्यासकार ने उजागर किया है। रणेंद्र ने सदियों से उपेक्षित, हाशिए का जीवन जीते असुर समुदाय का सुखःदुख, व्यथा प्रस्तुत करते हुए असुरों के लोकजीवन के पक्ष को भी स्पर्श किया है। असुरों के रहन–सहन, परिवार, रस्म–रिवाज, लोकाचार, पर्व–त्यौहार, विश्वास, परंपराएँ, धर्म, संस्कृति, संस्कार, पूजा–पध्दति, मान्यताएँ आदि को भी इस उपन्यास में रेखांकित किया है।

हरिराम मीणा ने राजस्थान के आदिवासी भील सूरमाओं की शहादत पर 'धूणी तपे तीर' उपन्यास लिखा है, जो सन 2008 ई. को प्रकाशित हुआ। दक्षिणी राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में गोविन्द गुरू के नेतृत्व में आदिवासी भीलों ने अंग्रेजी एवं देशी सामन्ती शासकों के विरूध्द एक लंबी लड़ाई लड़ते हुए अपनी मातृभूमि को स्वाधीनता दिलाने हेतु अपनें प्राणों की आहुति दे डाली। जिसमें डेढ़ हजार से अधिक आदिवासियों की शहादत हुई। उस शहादत को केंद्र में रखकर प्रस्तुत उपन्यास पहले आदिवासी जलियांवाला बाग हत्यांकांड की समरगाथा बयान करता है।

गोविंद गुरू ने मानगढ़ आंचल में सम्पसभा का गठन कर आदिवासियों में चेतना एवं आंदोलन फैलाया गोविन्द गुरू दक्षिणी राजस्थान के गॉव–गॉव में सम्प सभाओं के माध्यम से धूणी–धाम स्थापित कर देशी रियासतों के शासक और फिरंगियों के द्वारा किए जानेवाले अत्याचार, दमनचक्र, शाषण, उत्पीड़न से तंग आए अभाव, गरीबी, भूखमरी, महामारी के अघाये–सताये आदिवासियों को मुक्ति दिलाकर स्वराज्य के अकांक्षी थे। ''गोविन्द गुरू......भूरेटिया अर्थात फिरंगियों को अपना असली दुश्मन मानते थें चूँकि उन्हीं के कारण देसी राजाओं ने आदिवासी विरोधी नीतियॉ लागू की थीं......अग्रेजों का सत्ता–केंद्र दिल्ली था.....गोविन्द गुरू का अंतिम लक्ष्य दिल्ली की गद्‌दी था। अर्थात अंग्रेजी राज का खात्मा। उनका सपना था भविष्य में आदिवासी पंचायत राज करें। उनकी विचारधारा का केंन्द्रीय भाव आदिवासियों को कष्टों से मुक्ति दिलाना था।''10 गोविन्द गुरू का आंदोलन अपने चरम लक्ष्य की ओर बढ़ता देख राजस्थान और गुजरात की रियासतें तथा ब्रिटिश सरकार बौखला गयी। सन् 1913 ई. में कैप्टीन स्टोक्ले, कैप्टीन पीटरसन, मेजर वेली के नेतृत्व में भूरेटिया तथा देशी रियासती फौजी टुकड़ियों ने संयुक्त अभियान चलाकर मानगढ़ पर्वत पर हो रही आदिवासी पंचायत के जमावडे पर अचानक धावा बोल दिया। मानगढ़ पर्वत पर हुए बर्बरतापूर्ण नर–संहार में डेढ़ हजार से अधिक आदिवासियों की शहादत हुई। यह नर–संहार काण्ड सन 1919 में हुए जलियॉ बाग हत्याकाण्ड के शान्तिप्रिय देशभक्तों की शहादत से चार गुणा अधिक होकर भी इतिहासकारों ने इस शहादत की ओर अनदेखा किया यह खेदजनक है। इतिहासकारों की दृष्टी इस शहादत की ओर अगर जाती तो निसन्देह यह देश का पहला जलियॉ बाग हत्याकाण्ड़ साबित होता।

संभावनाएँ

आदिवासी समुदाय पर अब तक जो उपन्यास लिखे गये हैं वे अधिकतर गैरआदिवासी लेखकों के माध्यम से लिखे गये गिने–चुने उपन्यास हैं। ये उपन्यास बाहरी निरीक्षण और परानुभूति के आधार पर लिखे हैं। परिणामतः उसमें स्वानुभूति और गहराई का अभाव है। इनके चित्रण में सहानुभूति और सतही तौर की जानकारी मिलती है। आज आदिवासी समुदाय से ऐसे उपन्यासकार सामने आये जो स्वयं के और समाज की भोगी हुयी पीड़ा, वेदना, टीस और प्रश्नों को अत्यंत पैनेपन, जीवन्तता और बारीकी से प्रस्तुत करें। इस कमी की पूरी भविष्य के हिंदी उपन्यास साहित्य कें माध्यम से की जाने की संभावना है क्योंकि आज आदिवासी शिक्षित बन रहे हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, कुछ साहित्य सृजन में भी आए है। भविष्य में हालात बदलेंगे और ये स्वानुभूति कलमबध्द होने लगेगी।

आज दलित साहित्य व्यापक रूप में प्रचारित और प्रसारित हुआ है। हिंदी दलित साहित्य विभिन्न विधाओं में लिखा जा रहा है। जहॉ तक दलित उपन्यास का सवाल है दलित जीवन पर दलितों द्वारा लेखन की कोई कमी नहीं है। आज तो ऐसी अवस्था है कि हर रोज दलित उपन्यासकारों के नये–नये उपन्यास प्रकाशित हो रहे हैं। और आदिवासी उपन्यास औसतन वर्ष में एखाद दुसरा प्रकाशित होता है। कुल आदिवासी जनसंख्या के अनुपात में यह स्थिति बहुत ही निराशाजनक है। आदिवासी जीवन को उपन्यास साहित्य में व्यापक धरातल और आयाम प्रदान कराना है तो केवल संगोष्ठियों,चर्चासत्रों, सम्मेलनों से काम नहीं चलेगा बल्कि गैर आदिवासी हो या आदिवासी साहित्यकार उनको हाथ में कलम लेकर आदिवासी जीवन को कागज पर उतारना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी हैं मुझे आशा है भविश्य की गर्भ में इस संभावना को हिंदी उपन्यास द्वारा मूर्त रूप मिलेगा।

सभी लोग यह स्वीकार करते हैं कि भारत में सबसे ज्यादा खोने और सबसे कम पानेवाला समाज आदिवासियों का ही है। इतिहास में मुक्ति की सबसे ज्यादा लडाईयॉ और आंदोलन आदिवासी समुदायों द्वारा चलाए गए है। आदिवासियों ने ही भारत के किसी भी समुदाय से सबसे ज्यादा त्याग और बलिदान दिया है। आदिवासी तब भी मारे गये आज भी मारे जा रहे हैं लेकिन इसकी व्यापक चर्चा न तो मुख्यधारा के समाज में है और न इतिहास में। अगर हिंदी उपन्यास के क्षेत्र के पीछले दस वर्षों के उपन्यासों पर नजर डाली जाए तो कुछ गिने–चुने उपन्यासकारों ने ही इसकी चर्चा अपने उपन्यासों में की है यह कहना पड़ेगा। उदा. के लिए संजीव का 'जंगल जहॉ शुरू होता है', मधुकर सिंह का 'बाजत अनहद ढ़ोल', राकेश कुमार सिंह का 'जहॉ खिले है रक्त पलाश', हरिराम मीणा का 'धुणी तपे तीर', रणेंद्र का 'ग्लोबल गॉव के देवता' और राजेन्द्र मोहन भटनागर का 'मगरी मानगढ़ः गोविन्द गिरी'। आदिवासी समुदाय के साथ न्याय करना है तो भविष्य के हिदी उपन्यास साहित्य का दायित्व बढ़ जाता है और वह पूरी इमानदारी के साथ आदिवासियों के साथ न्याय करें।

आदिवासी उपन्यासकारों ने आदिवासी संस्कृति को लेकर जो वर्णन किया है उसमें व्यापकता नहीं है क्योंकि उनके संस्कृति के एक से एक गहरे पक्ष है जिनको वे उजागर नहीं कर सके है। आदिवासी संस्कृति के अंतर्गत उनका रहन–सहन, वेशभूषा, खान–पान,रस्म–रिवाज, संस्कार, पर्व–त्यौहार, जनजातीय मेले, लोकगीत, लोकनाट्‌य, लोककथाऍ,लोककला, लोकभाषा, लोकनृत्य आदि को वर्तमान उपन्यास में गहराई से प्रस्तुत नहीं किया गया है। जो भी चित्रण आया है वह संक्षिप्त रूप में। आदिवासियों की हड़प्पा और मोहनजोदड़ो संस्कृति के बारे में रमणिका गुप्ता कहती हैं–''मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के असली रहस्य का उद्‌घाटन अभी तक नहीं हो पाया है, हमारे लेखकों का दायित्व है कि वे इस रहस्य का उद्‌घाटन करें ताकि दुनिया जाने कि इतनी समृध्द वह सभ्यता किसकी थी''11 आदिवासी संस्कृति की अनमोल धरोहर को संजोए रखना है, आधुनिक समाज से उसकी उदात्तता का परिचय कराना है, तो इसके लिए आवश्यक है आदिवासी संस्कृति की विस्तृत चर्चा और चित्रणवाले उपन्यास भविष्य में लिखे जाए।

हम शिवाजी महाराज, राणी लक्ष्मीबाई, महाराराणा प्रताप, राजा राममोहन राय,गोखले, आगरकर, तिलक, सुभाषचंद्र बोस, महात्मा गांधी, महात्मा फुले, शाहु महाराज,डॉ. बाबासाहब आंबेडकर, आदि सभी महापुरूषों के जीवन और कार्य से तो परिचित हैं लेकिन कितने लोग जानते हैं कि आदिवासी समुदाय के सिध्दु, कान्हु, बिरसा मुण्डा, तेलंगा खडिया, बुधु भगत, तलक्कर बूँद, दुक्कन मॉझी, तिलका माझी, बिंदराय, सिंह राय, खाज्या नाईक, भीमा नाईक, चोट्‌टी मुंड़ा, झलकारी बाई, सिनगी दायी, कैली दायी, अंबार दादा, कोमरम भीम, फूलो झानी, मांगी कुडा आदि आदिवासी नायकों का कार्य भी अमुल्य है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन, देशभक्ति, समाज सुधार आदि कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है किन्तु उनका कार्य अंधेरे में ही रहा है। उनके जीवन और कार्य पर प्रकाश डालना है तो साहित्यकारों को हाथ में कलम लेकर साहित्य सृजन करा होगा यह कार्य अगर भविश्य में होगा तो हमारी महापुरूशों की सूची बढेगी और उनके कार्य को व्यापक आयाम मिलेगा। यह हिंदी उपन्यास के लिये गौरव की बात होगी।

अधिकांश आदिवासी समाज आज भी आबादी से दूर जंगलो, पर्वतों, दुर्गम इलाकों में निवास किये हुए है। भारतीय महाद्विप में अनेक आदिवासी जातियॉ निवास करती हैं जिनको अब तक पूरी तरह से नोटीफाईड भी नहीं किया जा सका है। और जो नोटीफाईड किए गये है, उनके साहित्य का मूल रूप अलिखित और मौखिक है जो कुछ लिखित है वह आदिवासियों की अपनी अलग–अलग भाशाओं में। उनकी अपनी अलग 7भाषा, शब्द संपदा, कहावतें, पहेलिया, विभिन्न लोककलाऍ, लाककथाऍ लेकिन उसे जानने और समझने में बहुत बड़ी समस्या है– भाषा। अगर हिंदी भाषा और साहित्य को व्यापक और समृध्द बनाना है तो इसके लिए आवश्यक है आदिवासी साहित्य का हिंदी साहित्य की हर विधा में अनुवाद हो। जिससे हिंदी साहित्य समृध्द बनेगा। उनकी भाषात्मक, कलात्मक, सांस्कृतिक, धरोहर अगर हिंदी में आए तो यह हिंदी साहित्य के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि और गौरव की बात होगी जिसके लिए हिंदी उपन्यास महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा, भविष्य में इसकी बहुत बडी संभावना नजर आ रही है।

संदर्भ संकेत

1. राकेश कुमार सिंह, 'पठार पर कोहरा', पृ.73, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र. सं. 2003
2. मधुकर सिंह, 'बाजत अनहद ढ़ोल', पृ.73, वाणी प्रका, नई दिल्ली, द्वि. सं. 2005
3. मधुकर सिंह, 'बाजत अनहद ढ़ोल', पृ.113, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वि. सं. 2005
4. शरद जोशी, 'पिछले पन्ने की औरतें', पृ.27, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2005
5. शरद जोशी, 'पिछले पन्ने की औरतें', पृ.68, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2005
6. रामनाथ शिवेंद्र, 'तीसरा रास्ता', पृ.107, पिलग्रिम्स पब्लिकेशन्स, वाराणसी, प्र. सं. 2010
7. भगवानदास मोरवाल, 'रेत', पृ.35, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2008
8. रणेंद्र, 'ग्लोबल गॉव के देवता', पृ.43, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वि. सं. 2010
9. रणेंद्र, 'ग्लोबल गॉव के देवता', पृ.33 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वि. सं. 2010
10. हरिराम मीणा, 'धूणी तपे तीर', पृ. 309 साहित्य उपक्रम, हिरयाणा, प्रथम संस्करण 2008
11. सं. रमणिका गुप्ता, 'युध्दरत आम आदमी' आदिवासी संमेलन विशेशांक, सन्1996, रांची पृ.6

प्रा. भोपळे वर्शाराणी राम रामकृष्ण
सहायक प्राध्यापक,,
श्री सरस्वती महाविद्यालय, अंबाजोगाई
जि.बीड (महाराष्ट्र)
e mail- vranibhople@gmail.com

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net